मूल्य : 20 रुपये
15 जनवरी - 15 अप्रैल, 2021

वर्ष : 09, अंक : 39

नर्मदा समग्र

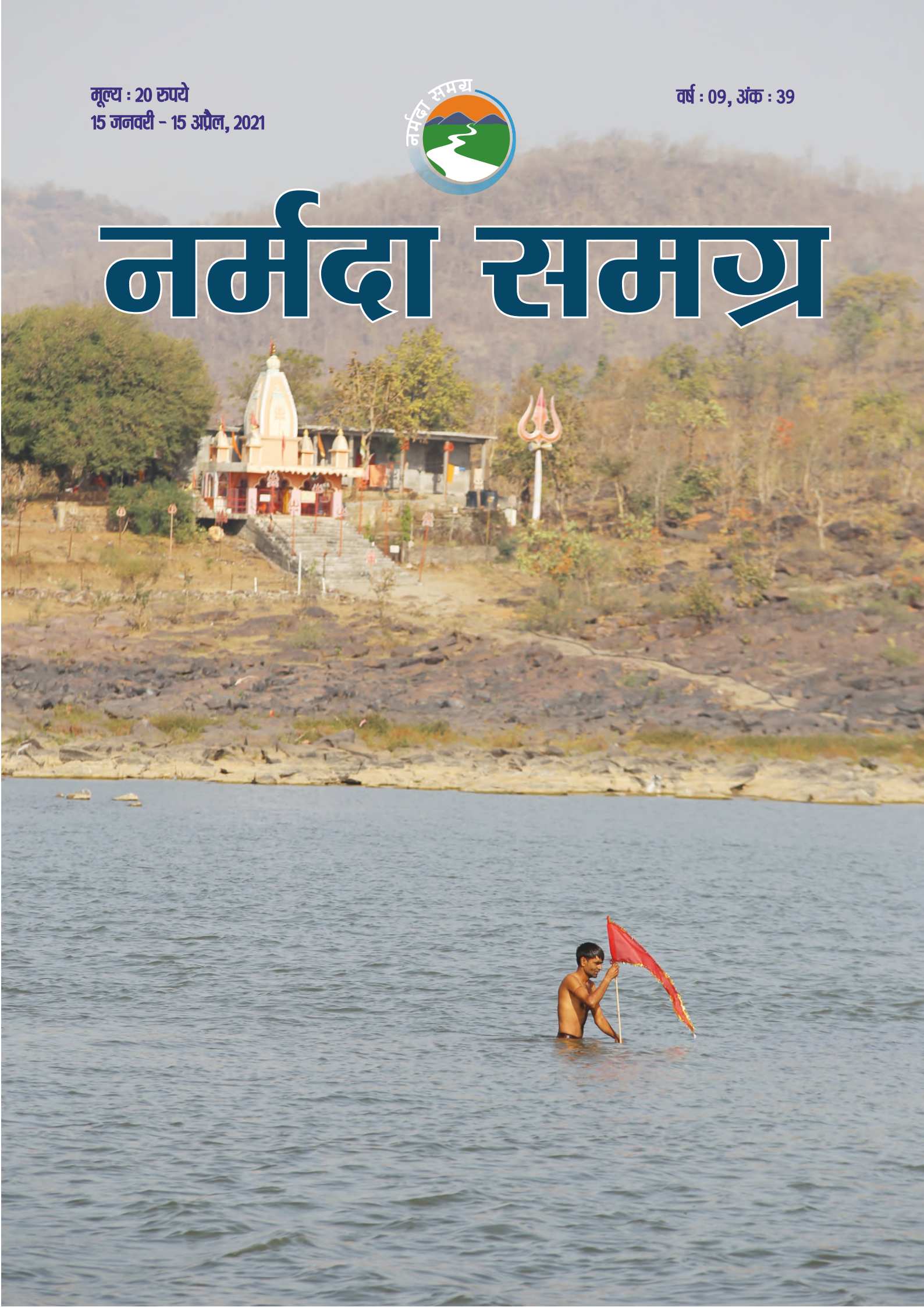

नर्मदा समग्र न्यास द्वारा सरदार सरोवर डूब क्षेत्र में संचालित नदी एम्बुलेंस और रेवा सेवा केंद्र ककरना के अंतर्गत की जाने वाली गतिविधियों का इंदौर संभागायुक्त डॉ. पवन कुमार शर्मा ने (जनवरी 2021) अवलोकन किया। उन्होंने नर्मदा समग्र द्वारा किए जा रहे प्रयासों और कार्यों को सराहा एवं इस दुर्गम क्षेत्र में कार्य को अधिक जनोन्मुखी बनाने हेतु सुझाव दिए व कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित किया।

नर्मदा समग्र

का त्रैमासिक प्रकाशन

वर्ष : 09
अंक : 39
माह : जनवरी-अप्रैल 2021

संपादक
कार्तिक सप्रे

आकल्पन
संदीप बागड़े/दीपक सिंह बैस

मुद्रण
नियो प्रिंटर्स
17-बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल

सम्पर्क
'नदी का घर' सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल-462016

इस अंक में .....

रेवा सेवा केन्द्र ककराना में वृक्षारोपण

1. नर्मदाष्टक एवं जैव विविधता 02
2. नर्मदा जयंती 04
3. माँ नर्मदा की जयंती पर नर्मदा समग्र की भूमिका 06
4. माँ नर्मदा की धमनियों को जीवंत करना होगा 07
5. जल के सम्मान, जल स्तोत्रों के संरक्षण से आएगी 08
6. जल संचयन का सरल तकनीकी समाधान 09
7. भारतीय संस्कृति और संरक्षण 11
8. नदी चिकित्सा वाहन (रिवर एम्बुलेंस) एक अदभुत प्रकल्प 13
9. जल नायिका कोता बाई 14
10. राष्ट्रीय अतंरराष्ट्रीय स्तर पर नर्मदा समग्र की सहभागिता 16

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल से मुद्रित एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : कार्तिक सप्रे। फोन : 0755-2460754

नर्मदाष्टक एवं जैव विविधता

नर्मदाष्टक एवं जैव विविधता - भारत में मध्य काल तक जल एक निर्मल विषय हुआ करता था और उसकी शुचिता निर्विवाद थी। पेड़-पौधे, वन्य प्राणी, पक्षी, मृदा आदि अनुभूति के विषय होते थे। कालांतर में जब इनका शोषण एवं प्रदूषण हुआ तब जैव विविधता जैसे शब्द उद्‌भुत हुए। आदि शंकराचार्य जब ओंकारेश्वर में प्रकृति के सान्निध्य में रहे तब 'नर्मदाष्टक' का प्रणयन हुआ। स्वाभाविक था कि विपुल जलराशि के मध्य एवं तट पर बिखरी जैव सम्पदा उनके चेतन और अवचेतन को उद्वेलित करती। इस अष्टक में आचार्य अवान्तर से इस विविधता की ही वंदना करते हैं- **त्वदम्बु-लीनदीन-मीन दिव्यसम्प्रदायकं, सुमत्स्य-कच्छ-नक्र -चक्र -चक्र वाक-शर्मदे ! (2)**
इसका भावानुवाद है- तेरे जल में लीन - दीन वे मीन स्वर्ग पा जाते माँ ! मच्छ-कच्छ-जलचर-नभचर चकई चकवे सुख पाते माँ !

यदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो शंकराचार्य ने कशेरुकी जगत के तीन महत्वपूर्ण फायलम का समावेश एक ही पंक्ति में कर दिया है- मीन- Pisces, मच्छ - Reptiles, चकई- Avies

आज की परिभाषाओं में देखा जाये तो aqua-fauna, terristrial fauna और avian fauna का यह घनीभूत उदाहरण है। एक अन्य श्लोक में वे कहते है- **सुलक्ष नीरतीर -धीर पक्षी-लक्षकूजितम ! (5)**

अर्थात तुम्हारे तीर पर बसने वाले लाखों पक्षियों से नर्मदा आपका तट गुंजायमान हो रहा है। इन उद्धरणों का आशय यह है कि अष्टक में वर्णित मार्कंडेय, शौनक, वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि आदि ऋषियों के समान जैव वैशिष्ट्य भी उनके समकक्ष पूजित रहा है। इस सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, इकोलोजिकल, और परम्परागत ज्ञान को नए परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन कर जन समुदाय को लाभान्वित करने की आवश्यकता है। □□

- डॉ. सुदेश वाघमारे

अमूल्य जल

जल ही जीवन है। डार्विन से लेकर दुनिया के सभी वैज्ञानिक मानते है कि जीव की उत्पति जल से हुई। हमारे शास्त्रों में जिन दस अवतारों का उल्लेख है, उनमें पहला अवतार मत्स्य अवतार है, मत्स्य यानि जलीय जीव। जीवन को बनाये रखने, जैव-विविधता को बनाये रखने में जल सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जल के बिना जैव विविधता की कल्पना ही नहीं की जा सकती है।

जल संरक्षण, उसका प्रबंधन एवं संवर्धन कोई नया विषय नहीं, यह सदियों से हमारी संस्कृति और परम्परा का हिस्सा रहा है। जल का भारतीय सभ्यता व भारतीय जीवन दर्शन में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है।अगर हम बाढ़ और सूखे की ही बात करें तो यह दोनों ही नियमित रूप से होते रहे हैं। जिनकी तीव्रता शायद कभी कम तो कभी ज़्यादा रही है। और अगर जल संरक्षण व प्रबंधन को भी देखा जाए तो प्राचीन भारत में भी इसके कई उदाहरण मिल जाएँगे। देश के हर हिस्से में हमें जल संचयन संरचनायें मिल जाएँगी। इनके साथ हमें उस क्षेत्र की परिस्थितिकि, भौगोलिक, पारंपरिक और सांस्कृतिक विशिष्टाएँ भी देखने को मिलेगी। इन सब तकनीकों के मूल अवधारणा में हम यह देख सकते हैं की जब भी और जहां भी वर्षा होती है, उसका वहीं संचय करना चाहिए।

जल के स्त्रोतों में नदियाँ भी है, जिनके किनारे सभ्यता का विकास हुआ, जिनसे हम पीने के लिए, खेती के लिए, उद्योगों के लिए, एवं अन्य उपयोग हेतु पानी लेते हैं उन्हें हमारी परम्परा ने एक सम्पूर्ण इकाई के रूप में देखा है, जो सामाजिक, सांस्कृतिक व भोगौलिक परिवेश को अपने में समेटे हुए प्रवाहित होती है। नदियाँ साक्षी हैं मनुष्य के उस आचार-व्यवहार की जिसके मूल में प्रकृति के साथ साहचर्य का भाव प्रतिष्ठित रहा। नदियाँ और उनके किनारे बसने वाले जीव-जंतु, पहाड़, वन, वनवासी, सब मिलकर एक जीवन तंत्र बनाते हैं। यह तंत्र इसलिए है क्योंकि इसमें एक अनुशासन है। यह अनुशासन थोपा हुआ नहीं बल्कि स्वाभाविक है। किंतु पिछले कुछ दशकों से जब से समाज ने नदियों और प्राकृतिक संसाधनों को उपभोक्ता की नजर से देखना शुरू किया है, इस जीवन तंत्र की लय टूटने लगी है। प्रकृति के साथ हमारे संबंध की कड़ी साहचर्य न होकर बाजार हो गया है। परिणाम स्वरूप नदियाँ ही नहीं उनका पूरा परिवेश जिसमें जैव-विविधता, कृषि, लोक संस्कृति, आजीविका शामिल हैं, सभी बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। नदियों का नालों में बदलना या सुखना सिर्फ एक भोगौलिक बदलाव नहीं बल्कि संस्कृति का रस विहीन शुष्क हो जाने जैसा है।

आज आवश्यकता है की हम अपनी मूल अवधारणाओं को और उसके पीछे के विज्ञान को समझें। विश्व आद्रभूमि दिवस हो या विश्व जल दिवस या विश्व वानिकी दिवस हो, नर्मदा जयंती हो या अन्य कोई दिवस जिसमें हम प्रकृति के प्रति आभार प्रकट करते हैं, उनके सुरक्षा, संरक्षण, सवर्धन की बटे करते हैं, गतिविधियाँ करते हैं। यह दिवस विशेष संकेत के रूप में हैं, परंतु यह कार्य निरंतर एवं प्रतिदिन करने का है।

प्राकृतिक संसाधनों के, विशेष कर जल के प्रति हमारा भाव क्षीण होता जा रहा है। जल इष्ट है,जल से स्वास्थ्य है, जल से नगर व ग्राम व्यवस्था है, जल से उद्योग है, जल से ऊर्जा है, जल से खाद्य है, जल से - मैं हूँ, आप हैं, हम सब हैं। जल सृजन से विसर्जन तक कई रूपों में, कई प्रकार से, हमारे प्रयोग-उपयोग में आता है। नदियों में बहने वाला जल हो या भूमिगत जल या ग्लेशर से पिघल कर आने वाला जल या वर्षा जल, किसी भी रूप में देखें जल तो जल है, इसके स्त्रोत अलग हो सकते हैं पर पावनता अक्षुन्न है। पंच तत्वों में से एक इस जल का संरक्षण, प्रबंधन और संवर्धन करना हमारे नैतिक दायित्व है। हमें इन पंच तत्वों के आपसी संतुलन को बनाए रखने का प्रयत्न करना होगा और व्यक्तिगत, सामूहिक एवं सामाजिक स्तर पर प्रकृति की सेवा का, उसके साथ साहचर्य का भाव पुनः विकसित करना होगा। □□

कार्तिक सप्रे
संपादक

नर्मदा जयंती

❑ भारती ठाकुर

हमारी भारतीय संस्कृति में केवल देवी देवताओं के मूर्तियों का ही पूजन नहीं किया जाता। बरगद जैसा विशाल काय वृक्ष हो या तुलसी का छोटा सा पौधा हो, हमारे लिये पूजनीय है। हर नदी भी हमारे लिये देवी - देवता ही है। जीवन दायिनी है, लोकमाता है। रोज स्नान करते समय हम प्रार्थना करते है -

'गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जले अस्मिन् सन्निधिम् कुरु।।'

इस मंत्र का अर्थ ये है कि, ''हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु, कावेरी नदियों ! मेरे स्नान करने के इस जल में आप सभी पधारिए।'' हिंदुस्थान की हर नदी के साथ कोई ना कोई कहानी जुडी हुई है। विशेष बात यह है की इन्सान की तरह हम उनके जन्मदिन भी मनाते है। गंगा जी का जन्म दिन वैशाख शुक्ल सप्तमी को मनाया जाता है, कावेरी नदी का मकर संक्रांती को तो मां नर्मदा का माघ शुक्ल सप्तमी को।

स्कंद पुराण में 'रेवाखंड' में नर्मदा का विस्तारपूर्वक वर्णन है। उसकी उत्पत्ति संबंधी कथा जानकारी बडी रोचक भी है। कुछ पल को हम उन्हें दंतकथा-लोककथा भी मान लें, तब भी उन कथाओं में तत्कालीन जन समूह की नदी के प्रति श्रद्धा व अपनत्व दिखाई देता है। नर्मदा उत्पत्ति के संबंध में स्कंद पुराण में कहा गया है की आदि-सत युग में समस्त प्राणियों से ओझल होकर शंकर जी ने विंध्याचल पर कठोर तपस्या की। जनकल्याण की भावना मन में लेकर शंकर जी ने पार्वती सहित यह तपस्या की। उस समय तपस्यारत शंकर जी के शरीर से पसीना इतने अधिक मात्रा में था कि पर्वत से बहने लगा। इसी से नर्मदा की उत्पत्ति हुई। उस स्वेद प्रवाह का अचानक एक रूपवती कन्या में परिवर्तन होता है। वह कन्या शिव की आराधना करती है, और शिव-पार्वती उस पर प्रसन्न होते हैं । वही नर्मदा है।

नर्मदा शिवजी से एक अद्‌भुत वर माँगती है- हे भगवन ! मुझे अक्षया-अमर कर दो। यह चराचर सृष्टि प्रलय में नष्ट हो जाए, तब भी मेरा अस्तित्व बना रहे। सारी नदियाँ, समुद्र नष्ट हो जाए, तब भी मैं अक्षया रहूँ। मेरे जल से, स्नान करते ही घोर पापी जनों को भी पापमुक्त करने की क्षमता भर दो।

उसकी इस अक्षुण्णता का वर्णन अनेक पौराणिक ग्रंथों में है। लेकिन केवल दंतकथा कह कर इसे हम उपेक्षित नहीं कर सकते। प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता श्री व्ही.एस. वाकणकर जी ने लिखा है- लगभग 30 लाख साल पहले का मानव, पूर्व पाषाण युगीन पूर्वज-अन्न, आसरे की खोज में नर्मदा घाटी में भटक रहा था। इस उदाहरण के संदर्भ से पौराणिक ग्रंथों में नर्मदा की अक्षुण्णता के वर्णन का तात्पर्य समझा जा सकता है। 1978 में देवकछार में हाथी की अस्थियों का सबसे बड़ा ढाँचा खुदाई में मिलना- यह घटना, नर्मदा घाटी आदिम-जीवों, प्राणियों की आधार भूमि थी, इसका प्रमाण है।

इसके अतिरिक्त समुद्री घोड़ा, डायनोसेरॉस, यूनिकोस्निस आदि प्राणियों के जीवाश्म भी नर्मदा किनारे किये गये उत्खनन में मिले हैं। कुछ वर्ष पूर्व मांडवगढ़ मे भी डायनोसेरॉस के अंडे खुदाई में मिले हैं। इन सब बातों से नर्मदा भारत की प्राचीनतम नदी है, इस तथ्य की पुष्टि होती है। अनेक विकसित देशों में किये गये अन्वेषणों के अनुसार भी नर्मदा भारत की ही नहीं अपितु संसार की प्राचीनतम नदियों में से एक है, यह सिद्ध हो गया है। पूर्व पाषाण काल से आज तक अनेक प्रलयंकारी जल प्लावनों से संघर्ष करती नर्मदा ने आज तक अपना अस्तित्व बनाये रखा है।

नर्मदा ने शिवजी से वर माँगा था कि पृथ्वी पर स्थित सारे तीर्थों के स्नान से प्राप्त पुण्य मेरे जल में स्नान करने वालों को मिले। केवल इतने पर ही वे संतुष्ट नहीं हुई। उसने शिवजी से विनती की- 'हे महेश्वर, पार्वती सहित आप मेरे तट पर निवास करें।' नर्मदा की आराधना से प्रसन्न हुए महेश्वर कहते हैं -

एवम्भवतु कल्याणि यत्वयोक्तमनिन्दिते।
(तथास्तु ! हे कल्याणी, जैसा तुमने कहा वैसा ही हो !)

नर्मदा को सोमोद्भवा भी कहा जाता है। स्कंद पुराण में इसका वर्णन एक अलग दृष्टिकोण से किया गया है। शिवजी पार्वती के साथ क्रीड़ारत थे, तब दोनों के शरीर से स्वेद बिंदु निकले। इसलिये नर्मदा सोमोद्भवा है। उमयासह वर्तत इति सोमः (रुद्रः) तस्मात् उद्भवः यस्यासा इति सोमोद्भवा।
इसका और भी स्पष्टीकरण स्कंद पुराण में है -

उमा रुद्रांग संभूता येन-चैशा महानदी...

(उमा और रुद्र के अंग से उत्पन्न है, अतः यह महानदी (नर्मदा) है।)

वशिष्ठ संहिता में नर्मदा उत्पत्ति की कथा राम को सुनाते समय वशिष्ठ ऋषि ने चंद्र से उत्पत्ति होने के कारण इसे सोमोद्भवा कहा है। वशिष्ठ ऋषि और प्रभु राम का यह संवाद भी मनोरंजक है।

अंधकासुर का वध करके भगवान शंकर प्रसन्न चित्त हो विराजे थे, तभी विष्णु ने शंकर जी की प्रार्थना करते हुए कहा ब्रह्मा, इंद्र, चंद्र आदि हम देव-दानवों के हिंसा के कारण पाप से दूषित हो गये हैं। इस पाप के शमन के लिये क्या उपाय है? अमरकंटक पर्वत पर यह संवाद चल रहा था। शंकर के हृदय में करुणा उत्पन्न हो गई। उसी क्षण उनके मस्तक पर स्थित चंद्रमा से एक बिंदु पृथ्वी पर गिरा, जिससे एक सुंदर कन्या उत्पन्न हुई।

नीलोत्पलदलशामा सर्वावयवसुंदरी।
सुद्विजा सुमुखी बाला सर्वाभरणभूषिता।।

(नीलकमल की पंखुरी सी श्यामल, सर्वांग सुंदरी, सुमुखी, सर्वाभूषण अलंकृता कन्या उत्पन्न हुई।)

उसने भगवान शंकर से पूछा -

पितासि त्वं मे जगतामधीशो।
दुरत्ययः काल उपात्त शक्ति :।
आज्ञप्तुं मामर्हसि देवदेव
किमस्ति कार्य करणीयमाशु ।।

(हे जगदीश्वर! तुम मेरे पिता हो, तुम मुझे आज्ञा दो, कि मुझे क्या करना चाहिये।)

भगवान शंकर ने कहा, तुम शीघ्र ही जलरूप धारण करो और जग में प्रवाहित हो जाओ। प्राणिमात्र का तुम कल्याण करो

तव वारिगतं चास्थि शिलारूपं भविष्यति।
तस्याप्यर्चनमात्रेण नरः काममवाप्नुयात।।

(तुम्हारे जल में गिरी अस्थियाँ भी शिला रूप धारण कर लेंगी। और जो नर उनकी पूजा करेगा, उसकी मनोकामना पूर्ण होगी।)

नर्मदे त्वं महाभागा सर्वपापहरी भव।
त्वदप्सु याः शिलाः सर्वा शिवकल्पा भवन्तु ताः।।

(हे नर्मदे! तुम बड़ी भाग्यशालिनी हो। तुम सब पापहरण करने वाली रहोगी। तुम्हारे पानी में स्थित सभी पाषाण शिव तुल्य होंगे।)

आज भी, नर्मदा का हर कंकर शंकर है, ऐसी अनेक लोगों की श्रद्धा है। नर्मदा की उत्पत्ति की कथा सुनाते हुए गुरु वसिष्ठ ऋषि जी ने प्रभू श्रीराम जी को बताया -

माघे च सितसप्तम्यां दासभे च रवेर्दिने।
मध्याह्न समये राम भास्करेण क्रमागते।।

(माघ मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी, अश्विन नक्षत्र, दिन रविवार, सूर्य मकर राशि तब दोपहर के समय श्री नर्मदा पृथ्वी पर अवतरित हई।)

इस नदी का नामकरण भी हमारे पूर्वजों ने अत्यंत उचित किया है। नर्म ददाति इति नर्मदा जो आनंद देती है, वही नर्मदा है।

यतो ददासि नो नर्म चक्षुषा त्वं विपश्यता।
ततो भविष्यसे देवी विख्याता भुवि नर्मदा।।

(देखने वाले को नयनसुख देनेवाली इस विशेष नाम से हे नर्मदा, तुम इस पृथ्वी पर विख्यात हो जाओगी।)

नर्मदा के कई नामों में से एक प्रचलित नाम है रेवा। स्कंदपुराण में नर्मदा का जो उत्तरी भाग है, उसे 'रेवाखंड' भी कहा गया है। रेवते इति रेवा। इससे सार्थक नाम नर्मदा के लिये, दूसरा कौन-सा होगा भला? उछलते कूदते, इठलाते दौड़नेवाली, पर्वत-पाषाणों को खंडित कर अपना मार्ग बनाने वाली, जिसकी आवाज (रव) सभी दिशाओं में व्याप्त होती है, ऐसी रेवा।

भित्वा शैलं विपुलं प्रयात्येवं महार्णवम्।
भ्रामयन्ती दिशः सर्वा रवेण महता पुरा।।
प्लावयन्ती विराजन्ती तेन रेवा इति स्मृता।

नर्मदा नदी मध्यप्रदेश के अमरकंटक से निकलकर महाराष्ट्र राज्य को स्पर्श करती हुई गुजरात राज्य में विमलेश्वर के पास अरब सागर में समर्पित होती है। उसके किनारों पर हर स्थान फिर वो गांव हो या शहर, हर साल माघ शुक्ल सप्तमी को नर्मदा जयंती का उत्सव बडे उल्लास के साथ मनाया जाता है। नर्मदा नदी के किनारे एक भी गांव ऐसा नही है जहां नर्मदा जी का मंदिर ना हो। हर गांव में नर्मदा जयंती के दिन रात हर गांव बस्ती में भंडारे अन्नदान होता है। दूरदूर से भक्त आकर नर्मदा जी में स्नान करते है। रात को नर्मदा जी में दीपदान किया जाता है। नांव को मगरमच्छ की आकार में सजाया जाता है और नर्मदाजी की मूर्ती उसमें विराजमान करते है। गांव-गांव में रंगा रंग कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। मानो यह दिन नर्मदा भक्तों को अपनी जीवन दायिनी के प्रति श्रद्धा कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर हो। भारतीय संस्कृति सर्व समावेशक है। कृतज्ञता का भाव हमारा गुण विशेष है।

गत बारह वर्षों से मेरा मध्यप्रदेश में नर्मदा जी के किनारे निमाड़ क्षेत्र में वास्तव्य है। मैंने लोगों की नर्मदा जी के प्रति जो श्रद्धा है उसे बहुत करीब से देखा है। किंतु कई बार ऐसा लगता है की इन भक्तों की इस श्रद्धा रूपी ऊर्जा को कुछ विधायक कार्यों में परिवर्तीत करना जरूरी है। हमारी श्रद्धा को केवल पूजा-अर्चना, भंडारों में सीमित ना रखकर नर्मदा में हो रहे प्रदूषण के प्रति अधिक सजग और सार्थक बनाना चाहिये।

नर्मदा जी को एक छोटी कुमारी कन्या के रूप में हम पूजते है। लेकिन अक्सर बालिका को जन्म से पहले मां की कोख में ही मारा जाता है। नर्मदा माई को कपडे की चुनरी तो ओढाते है पर उसके दोनों तटों पर वृक्ष कटाई करके किनारों को विरान बनाया जा रहा है। सही मायने में वृक्ष ही उसकी हरी चुनरी है और हम उसे ही नष्ट कर रहे है। मां नर्मदा को अक्षया मानकर उनके जल को भूज, अहमदाबाद में साबरमती, उज्जैन में क्षिप्रा तथा इंदौर, भोपाल जैसे कई शहरों में पहुंचा कर लाखों लोगों की क्षुधा तृप्ती हो रही है। लाखों हेक्टर जमीन को उसकी नहरों के द्वारा सिंचित किया जाता है। ऐसी मां नर्मदा को जन्म दिन की भेंट हम क्या दे। उसे सुजला बनाये रखने के लिये और उसकी घाटी को सुफला बनाये रखने के लिये, प्रदूषण मुक्त रखने के लिये, हमारी कन्याओं को जन्म लेने के अधिकार देने के लिये- आइये हम सब नर्मदा भक्त आज संकल्प करें। मां नर्मदा को जन्म दिन की इससे बेहतर भेंट और क्या हो सकती है? □□

माँ नर्मदा की जयंती पर नर्मदा समग्र की भूमिका

❑ लालाराम चक्रवर्ती

माँ नर्मदा जयंती माघ माह, शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को मनाई जाती है। आज से 15-16 वर्ष पूर्व नर्मदा जयंती का स्वरूप इतना भव्य नहीं था जैसे वर्तमान समय में मनाया जाता है। वर्ष 2008 में नर्मदा समग्र की स्थापना के पश्चात सर्वप्रथम 2009 की नर्मदा जयंती के पूर्व नर्मदा समग्र के संस्थापक सचिव मान. श्री अनिल माधव दवे जी द्वारा मध्यप्रदेश के 16 जिलों के 51 विकासखंडों में प्रमुख घाटों पर पर्यावरण अनुकूल दियों (दौना) में दीपदान का आग्रह किया गया। यह पहली बार था जब नर्मदा जयंती को लेकर नर्मदा समग्र अपने संदेश को कई घाटों तक लेकर गया। वर्ष 2010 में पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं की व्यवस्था आ जाने के बाद वर्ष 2011 से नर्मदा समग्र के घाटों की टीम भी नर्मदा जयंती पर बढ़ चढ़कर भाग लेने लगी।

वर्तमान समय में नर्मदा जयंती का स्वरूप इतना व्यापक होता जा रहा है कि छोटे-छोटे घाटों पर लाखों की मात्रा में दीपदान और कई सारे समूह भंडारे करने लगे हैं। ऐसे समय में नर्मदा समग्र के कार्यकर्ताओं ने अलग-अलग समूहों के बीच पर्यावरण अनुकूल दीपों पर दीपदान और पर्यावरण अनुकूल पत्तल-दौनो में भंडारे हेतु आग्रह करने का कार्य प्रारंभ कर दिया है।

मान. अनिल जी भाई साहब हमेशा कहां करते थे कि 'कोई परम्परा यदि बगैर सोचे समझे निभाई जाती है तो वह रूढ़ीवादी कहलाती है।' अतः हम सभी कार्यकर्ता नर्मदा माई की जयंती जिसका आध्यात्मिक महत्व ज्यादा उसके महत्व को समझे न कि लाखों के पटाखे, लाखों के कैक काटना, लाखों की लाइटिंग कर पैसों की बरबादी करना। यह प्रयास करना कि नर्मदा माई की जयंती का मूल भाव बना रहे और बाहरी आड़म्बरों को कम करने का प्रयत्न होता रहे। □□

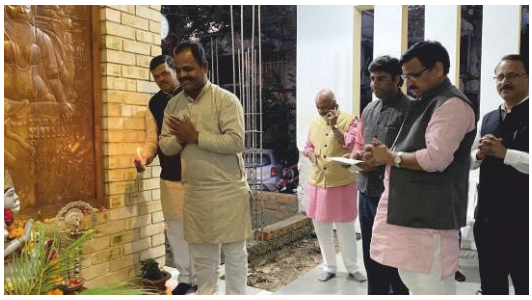

नर्मदा जयंती 2021 - "नदी का घर" पर दीप दान

माँ नर्मदा की धमनियों को जीवंत करना होगा...

❑ नवीन बोड़खे

जीवन दायनी माँ नर्मदा जिसका कल-कल, छल-छल करता अविरल जल, सैकड़ों वर्षों से मानव सभ्यता और प्राणी जगत के लिए संजीवनी उपहार है। मां नर्मदा के आँचल की शीतल छाव समस्त प्राणी जगत के लिए समान रूप से मिल रही है फिर वह वन्य प्राणी हो, आकाश में उड़ने वाले पक्षी हो या विभिन्न मानवीय जनजातीय समाज सभी ने अपना जीवन माँ नर्मदा के आँचल में बिना किसी अवरोध के जी रहे है। मां नर्मदा के इस आंचल में जीव जंतुओं और पक्षियों ने अपना आश्रय और भोजन प्राप्त किया तो मनुष्य ने अपने सभ्यता को सुरक्षित रखने के लिए सभी कुछ पाया है। नदी से जल तो वनो से औषधि, जरूरत की लकड़ी, भूमि से अनाज, रहने के लिए बालू और मिट्टी इत्यादि। जीवन जीने के लिए सभी आवश्यकता को मां नर्मदा ने पूरा किया। मां नर्मदा की गोद में जीवन जी रहे वन्य प्राणियों ने अपनी आवश्कता अनुसार वह सब कुछ ग्रहण किया जो उसके लिए जरूरी था। मनुष्य ने एक समय बाद कालान्तर में अपनी भूक बढ़ानी शुरू कर दी। नदियों की अविरल धारा पर बड़े-बड़े बांध बनाना हो या वनो की कटाई नदियों से अवैध बालू का उत्खनन हो या किनारों पर उपजाऊ भूमि को रासायनिक कीटनाशक और यूरिया डालकर जहरीला करने का कार्य मनुष्य ने बिना किसी संकोच के यह अपराध किया है। उसका यह अपराध आज भी निरंतर जारी है। और बदले में मनुष्य चाहता है कि वह निरोगी और स्वस्थ रहे आर्थीक सपंन्नता में किसी भी तरह की रूकावट न हो, किसी भी तरह की बाड़, सुखा, अतिवर्षा जैसी प्राकृतीक आपदा न आयें। मनुष्य खुद के लिये और अपने परिवार के लिये अनाज और सब्जीयां रासायन मुक्त चाहता है, पानी शुद्ध चाहता है, हवा शुद्ध चाहता है अनुकूल मौसम चाहता है उसका निरंतर विकास होता रहे और जीवन में शांती बनी रहे यही उसकी कामना है लेकिन ऐसा संभव होता व्यतित नहीं हो रहा।

यह बिल्कुल वैसा ही दृश्य है कि एक मूर्ख व्यक्ति वृक्ष की शाखा पर बैठकर उसी शाखा को पीछे से काट रहा है जिस पर वह खुद बैठा हुआ है। यदि आज समाज इस गलती को स्वीकार कर भूल सुधार करना चाहता है तो उसे वापस अपनी अनैतिक आवश्कताओ पर पूर्ण विराम लगाना होगा।

हमें इस भूल सुधार के लिए करना क्या होगा?

जो भी संभव हो सके उसे आज और अभी से करना शुरू कर देना चाहिए। अवैध बालू खनन रोक सकते है, वनों की कटाई रोक सकते है, रासायनिक खेती न करके भूमि और मां नर्मदा जी के जल को जहरीला होने से बचा सकते है। इसके साथ मां नर्मदा जी के अविरल प्रवाह को गति देने के लिए अपने ग्राम, नगर और शहर के सूखे पड़े कुवे, तालाब इत्यादि जल स्रोतों को जीवंत कर सकते हैं। यही जीवंत तालाब जल स्रोत और सहायक नदियां मां नर्मदा जी कि धमनियां है जिसके माध्यम से वह जल प्राप्त करती है। यदि देखा जाए तो नर्मदा नदी की जितनी भी सहायक नदियां और तालाब है वह लगभग सूख गए है। गावं के कुँवे, नदियां और बावड़ियां सूखे, नगर और शहर के तालाब सूखे। इसका विकल्प हमने मां नर्मदा नदी के रूप में चुना है और नदी पर आश्रित होकर अतिरिकत जल का दोहन करने लगे, लंबी-लंबी पाईप लाईने ग्राम, कस्बो और पहाडों के बीच से होकर नगरो और शहरो की प्यास बुझा रही है। मनुष्य की प्यास तक तो ठीक था लेकिन उसकी अनैतिक आवश्यकताओं ने उस जल का भी दुरपयोग करना शुरू कर दिया, जरूरत से ज्यादा जल का उपयोग, नल खुला छोड देना, घर की टंकीयो का ओवरफुल कर देना, अपने शौक पुरे करने के लिये जल का अपव्य करना। परिणाम यह हुआ की नदी के प्रवाह में असंतुलन प्रारंभ होना शुरू हुआ।

हमें इस असतुंलन को संतुलित बनाये रखने के लिये करना क्या होगा? हमें नर्मदा जी कि धारा को अविरल रखने के लिए छोटे - छोटे प्रयास करने होगें, water intensive farming से बचना, जल संरक्षण, प्रबंधन कर कृषि करना। जल के संरक्षण और पर्यावरण के लिए हम अपने घर - आंगन, अपने आस-पास, खैल मैदान, रिक्त पड़े खाली स्थानों में, नदी किनारे, तालाब किनारे, सघन पौधा-रोपण कर कर सकते हैं और इन पौधों को वृक्ष बनने तक सुरक्षित रखने का कार्य कर सकते हैं। इन्ही छोटे-छोटे प्रयासो से नदी का तो जल स्तर बढ़ेगा। इसके साथ अन्य जल स्त्रोतो को भी नया जीवन मिलना शुरू हो सकेगा। पहाड़ों, जल- कुंडो का गहरीकरण करना होगा। जल की हर बूंद के लिए किया गया यह कार्य निश्चित ही मां नर्मदा की धारा को अविरल बहने में सहयोग करेगी। □□

जल के सम्मान , जल स्तोत्रों के संरक्षण से आएगी जल समृद्धि

❑ डॉ. अनिल मेहता

वेटलैंड संरक्षण व सुरक्षा के उद्देश्य से प्रति वर्ष 2 फरवरी को पूरे विश्व में वेटलैंड दिवस आयोजित होता है। भूमि का वह हिस्सा जो वर्ष पर या वर्ष के कुछ दिनों तक पानी से नम रहता है , वो वेटलैंड कहलाता है। इस दृष्टि से समस्त झीलें, तालाब, नदी क्षेत्र वेटलैंड की श्रेणी में आते हैं। प्रति वर्ष वेटलैंड दिवस एक थीम को लेकर मनाया जाता है। वर्ष 2021 की लिए यह थीम वेटलैंड्स एवं पानी है। पानी, वेटलैंड व जीवन परस्पर आधारित है एवं पृथक नही किये जा सकते है। हमारा सम्पूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय एवं आर्थिक जीवन झीलों, तालाबों, नदियों, कुंवो, बावड़ियों के पानी पर निर्भर है। इन जल सरंचनाओं के बिना हमारा अस्तित्व ही नही हो सकता। लेकिन, हमारे अस्तित्व के आधार इन झीलों, तालाबो को हम अतिक्रमण, प्रदूषण से नष्ट करने पर तुले है। झीलें, तालाब हमारे पेयजल, सिंचाई व अन्य जल आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रमुख स्रोत है। लेकिन बेतहाशा गंदगी व कचरे के विसर्जन ने जल को गुणवत्ता को बुरी तरह प्रभावित किया है। पेयजल लेने के लिए पानी उठाने के इंटेक किनारों पर बने होते है। इन किनारों पर मानवीय गतिविधियों से बहुत कचरे का एकत्रीकरण होता है अतः इंटेक क्षेत्र में गुणवत्ता बहुत खराब ही रहती है। स्पीड बोट, मोटर बोट के संचालन से भी कचरा किनारों पर लगता है। साथ ही इनके चलने से तेल की एक परत भी झील सतह पर बन जाती है जिससे हवा का प्रवाह झील के भीतर होना रुकता है और जल खराब होता है। नावों के इंजिन से निकलने वाले धुंवे के कार्बन कण भी झील के भीतर ही समा जाते है और पानी को खराब करते है। अधिकांश छोटे तालाब तो कॉलोनियों, सड़कों की भेंट चढ़ गए है। जबकि ये तालाब जंहा बरसात के अतिरिक्त पानी को रोककर हमे बाढ़ से बचाते है वंही भूमिगत जल के पुनर्भरण को भी सुनिश्चित करते है। पानी को रोककर तालाब बनने की प्रक्रिया बांध बनने से ही सम्भव हो पाती है। लेकिन, स्वतंत्रता से पूर्व के 200 - 400 वर्षों में बनी झीलों के बांधो की सहनीय क्षमता, उनकी वर्तमान में ताकत, कोई खराबी यदि हुई हो तो उसका आंकलन हम वैज्ञानिक विधियों से नही कर पाए है। भारत सरकार पुराने बांधो के जीर्णोद्धार के लिए धन उपलब्ध कराती है। हमारे स्थानीय निकाय व जल संसाधन से जुड़े विभाग मिलकर स्थानीय इन परंपरागत बांधो की आधुनिक विधियों से तकनीकी जांच व आवश्यक उपचार सुनिश्चित कर सकते है। बांध रहेंगे तो पानी रहेगा। झीलों तालाबो में पानी की अधिकतम आवक हो इसके लिए यह भी जरूरी है कि इनके जलग्रहण क्षेत्रों में पेड़, पहाड़ व जमीन नही कटे।

> “सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय एवं आर्थिक जीवन झीलों , तालाबों, नदियों, कुंवो, बावड़ियों के पानी पर निर्भर है। इन जल सरंचनाओं के बिना हमारा अस्तित्व ही नही हो सकता। लेकिन, हमारे अस्तित्व के आधार इन झीलों, तालाबो को हम अति मण, प्रदूषण से नष्ट करने पर तुले है।”

झीलों तालाबो में पानी की गुणवत्ता बनी रहे इसके लिए कुछ सूचक महत्वपूर्ण है। एक प्रमुख सूचक स्थानीय प्रजाति की मछलियां है। झीलों, तालाबो व नदियों में मूल प्रजाति की लाभदायक मछलियों को पुनः स्थापित करना इन जलस्रोतों के पर्यावरणीय व पारिस्थितिकीय पुनरोद्धार के लिए जरूरी है।

वर्ष 2021 का वेटलैंड दिवस गुणवत्ता पूर्ण पानी को बनाये रखने, पानी के स्रोतों को बनाये रखने व पानी के भीतर के जीवन को बनाये रखने में एक नागरिक व शासकीय संकल्प लेने का दिन है। इसी क्रम में 22 मार्च जल दिवस का दिन भी महत्वपूर्ण है। इस वर्ष यह दिवस पानी की उपयोगिता, वेल्युइंग वाटर इस थीम के साथ मनाया गया। जल के प्रति असम्मान की भावना के कारण ही सर्वत्र जल समस्या दिखाई देती है। जल की बूंद बूंद की महत्ता को समझ कर उसे सहेजने से ही जल समस्या का समाधान निकलेगा।हमारा देश जल के सम्मान की संस्कृति का देश रहा है। देश के अलग अलग क्षेत्रों में वँहा की जलवायु , जमीन व बरसात की मात्रा के अनुसार जल स्त्रोत बने। सम्पूर्ण समाज इन जल स्त्रोतों की सुरक्षा, संवर्धन, संरक्षण, सम्मान व संचालन में भागीदार रहता था। भारत की जल सम्मान की परंपरा से पूरे विश्व ने जल बचाना व उसका प्रबंधन करना सीखा है।

जल सम्मान की इस व्यक्तिगत, सामुदायिक व शासनिक परम्परा के क्षीण होने से ही जल संकट गहराता जा रहा है । जल की सबसे ज्यादा खपत खाद्य पदार्थों में होती हैं। एक किलो गेहूं उत्पादन में बारह सौ लिटर पानी की जरूरत होती हैं। अन्न के दाने दाने को बचा कर, खाद्यान्नो का समुचित उपयोग कर हम जल संकट और भूखमरी से छुटकारा पा सकते है। फिर, पानी एक उत्पाद या वस्तु नही है जिसकी लागत कुछ रुपयों में सीमित की जा सके। पानी एक सामाजिक व पर्यावरणीय संपति है जो जीवन का आधार है। समुचित मात्रा व गुणवत्ता पूर्ण पानी के अभाव में देश की बड़ी आबादी जल जनित रोगों से पीड़ित है। सतही व भूजल के घटने से पूरा पर्यावरण प्रभावित हुआ है। ऐसे में जल की उपयोगिता व महत्व को समझ जल संरक्षण के नागरिक प्रयास आज की महत्वपूर्ण नागरिक जिम्मेदारी है। पेड़, पहाड़, पानी ही ईश्वर है। इनको सम्मान देने से ही हमारा जीवन सुरक्षित बनेगा। □□

जल संचयन का सरल तकनीकी समाधान

❑ हर्षित शर्मा

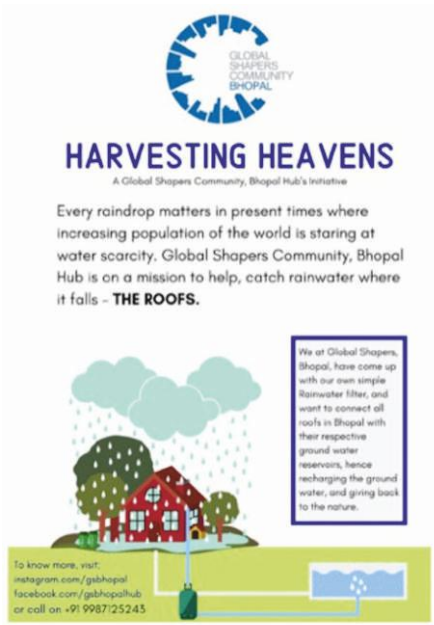

विश्व जल दिवस 2021 के अवसर पर, जब मैं गत वर्ष पर ध्यान देता हूं, तो व्यक्तियों, समुदायों, समाजों, गांवों या शहरों के लिए पानी की स्वतंत्रता की आवश्यकता कभी भी अधिक महत्वपूर्ण नहीं लगी। COVID-19 के समय मे हमारे सम्मानीय पीएम द्वारा गढ़ा गया आत्मनिर्भरता का नारा लाया है , जो की हमारे दादा और पूर्वजों के लिए एक मंत्र हुआ करता था। चाहे अनाज हो, सब्जियां हों, पानी हो, सब कुछ विकेंद्रीकृत रूप से उपलब्ध था, भले ही निजी तौर पर नहीं। आज सभी स्तरों पर सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता की पहुंच पर बल दिया जा रहा है। सरकार द्वारा जल जीवन मिशन और स्वच्छ भारत मिशन पर ध्यान केंद्रित करने के साथ पाइप के द्वारा जलापूर्ति और व्यक्तिगत शौचालयों की दिशा में काम एक अविश्वसनीय गति से चल रहा है। हमारे startup MLK Waste Management मे हम विकेंद्रीकृत पेयजल और अपशिष्ट जल उपचार समाधान प्रदान करने की दिशा में ध्यान केंद्रित करते हैं, जो हमेशा समाज में फ्रुगल/मितव्ययी टेक्नॉलजी को लाने के लिए किया गया है। ऐसी टेक्नॉलजी जो मालिक/उपयोगकर्ता स्थानीय संसाधनों के साथ समझ सकते हैं, संचालित कर सकते हैं और रखरखाव कर सकते हैं। सरकार को सभी लोगों को सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता प्रदान करने के लिए प्राथमिक हितधारकों के साथ मिलकर काम करना चाहिए, ताकि स्थानीय लोगों को तकनीकी सरलता और सशक्तिकरण मिले।

पानी के क्षेत्र में (अपने करियर में), मैं गांवों और शहरों में घरों और सामुदायिक स्तर पर रेनवाटर हार्वेस्टिंग, ड्रिंकिंग वॉटर फिल्टर और ग्रे वाटर/सीवेज रिसाइकिलिंग के लिए विकेंद्रीकृत और सरल तकनीकी समाधान प्रदान करने में शामिल रहा हूं। मेरा दृष्टिकोण स्वर्गीय श्री अनिल माधव दवे जी की यूनिक अप्रोच से प्रेरित हुआ है, जो पानी के प्रति मेरे काम में मेरी प्रेरणा रहे हैं। मैं नर्मदा बेल्ट में स्कूलों और समुदायों को नर्मदा समग्र एनजीओ में एक स्वयंसेवक के रूप में पेयजल फिल्टर और वर्षा जल फिल्टर/हार्वेस्टिंग सिस्टम के लिए तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करता हूं।

वर्षा जल संग्रहण

मैंने एक साधारण रूफटॉप रेन वाटर फिल्टर विकसित किया जो अवांछित मलबे, धूल, मिट्टी को, वर्षा के पानी से अलग करता है जो घरों की छतों पर मौजूद होते हैं, जिन्हें आगे फिल्टर करके सीधे घर पर इस्तेमाल किया जा सकता है या बोरवेल या हैंड-पंप / रिचार्ज के लिए निर्देशित किया जा सकता है या भूजल रिचार्जिंग के लिए रिचार्ज pits में डाला जा सकता है। इस पहल को हार्वेस्टिंग हैवन्स (Harvesting Heavens) का नाम दिया गया है और मैं इस फिल्टर को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने में मदद करने के लिए मुख्य रूप से नर्मदा समग्र और ग्लोबल शेपर्स भोपाल हब के साथ काम कर रहा हूं। हमने इस समाधान के विपणन के लिए कई प्लंबिंग ठेकेदारों, हार्डवेयर डीलरों के साथ भागीदारी की है। अब तक हमने भोपाल में रूफटॉप रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम की 20 से अधिक स्थापनाओं के साथ, हर मानसून के मौसम में 1 करोड़ लीटर पानी बचाने की क्षमता के साथ, 100000 वर्ग फुट से अधिक छत क्षेत्र को कवर किया है।

यह अनुमान लगाने के लिए कि एक मौसम में आपकी छत से वर्षा का पानी कितना बचाया जा सकता है, बस निम्नलिखित सूत्र का उपयोग करें :

चरण 1 : गणना छत क्षेत्र (वर्ग मीटर या वर्ग फीट में; 1 वर्ग मीटर = 10 वर्ग फीट)

चरण 2 : अपने क्षेत्र में वार्षिक वर्षा का आकलन करें (आम तौर पर वेबसाइटों में उपलब्ध डेटा मिलीमीटर (मिमी) या इंच में प्रदान किया जाता है। 1 इंच = 25.4 मिमी; 1 मीटर = 1000 मिमी)

चरण 3 : वार्षिक वर्षा के साथ छत के क्षेत्र को

WORLD WATER DAY 2021

गुणा करें, आपको कुल मात्रा में पानी मिलेगा जिसे बचाया जा सकता है (उदाहरण के लिए, 1000 वर्ग फुट की छत, या 100 वर्ग मीटर की छत, और 1000 मिमी या 1 मीटर की बारिश के लिए, कुल वर्षा की मात्रा 100 * 1= 100 घन मीटर (1 घन मीटर = 1000 लीटर) या 1,00,000 लीटर पानी हर साल बचाया जाता सकता है।

रेवा स्वजलम (फ़िल्टर)

नर्मदा समग्र में मैंने एक बहुत ही सरल लेकिन अत्यधिक प्रभावी पेयजलफ़िल्टर विकसित करने में मदद की, जो तालाबों, भूजल, नदी के पानी जैसे स्रोतों से गंदगी, लोहा, कुछ बैक्टीरिया को हटा देता है और इसे पीने के लायक बनाता है। यह फिल्टर स्लोसैंड फिल्ट्रेशन तकनीक और एक्टिवेटेड चारकोल फिल्ट्रेशन पर आधारित है। यह फ़िल्टर किसी भी गाँव/कस्बे/ शहर में स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों से बनाया जा सकता है और इसे स्कूली बच्चों, गृहिणियों या किसी भी व्यक्ति द्वारा स्थापना गाइड देख के आसानी से बनाया जा सकता है। अब तक, मैंने नर्मदा समग्र के 150 से अधिक स्वयंसेवकों को रेवा फ़िल्टर बनाने का प्रशिक्षण दिया है ताकि वे अपने समुदायों को सुरक्षित पेयजल की पहुँच के लिए इस फिल्टर को विकसित करने में मदद कर सकें। इस फिल्टर को बनाने में 200 से 250 रुपये से अधिक का खर्च नहीं होगा। इसके कई अन्य उपयोग हैं जैसे वर्षा जल फिल्ट्रेशन, सामुदायिक स्तर पर बड़ा फिल्ट्रेशन प्लांट जो की हमने जहानपुर एवं रामनगर (चित्र नीचे हैं) में लगाया है।

अपशिष्ट जल उपचार और रीसाइक्लिंग :

मैंने 2014 में अपने बिजनेस पार्टनर और बचपन के दोस्त दुष्यंतसचदेवा के साथ MLK Waste Management की शुरुआत की, जिसमें हम बेकार पानी को देखने के तरीके में बदलाव लाने के विज़न के साथ थे। हम पानी के प्रति लोगों के व्यवहार को बदलना चाहते थे और उन्हें अपने दैनिक दिनचर्या द्वारा इसे प्रदूषित न करने के लिए जागरूक करना चाहते थे। इन वर्षों में, हमने तकनीकी नवाचार किए हैं, जिस तरह से अपशिष्ट जल को शहरों और समुदायों में इलाज किया जा रहा है और मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, असम और महाराष्ट्र में 200 से अधिक प्राकृतिक सीवेज उपचार संयंत्र स्थापित किए गए हैं। ये प्लांट्स प्राकृतिक बेक्टेरिया, ग्रेविटी और इंजीनियरिंग एवं सौंदर्यीकरण के एक अनूठे मेल का उपयोग करते हुए घरेलू अपशिष्ट जल का उपचार करते हैं। अंतिम परिणाम, recycled और reusable पानी जो कि बागवानी, flushing , कार धोने / फर्श धोने के लिए सुरक्षित है, और 5 पैसे प्रति लीटर से कम में उत्पादित किया जाता है। हमने Intensive Aquaculture के लिए टेक्नॉलजी भी विकसित की हैं, जहां मछुआरे एवं किसान अपनी उपज की पैदावार प्रति यूनिट भूमि क्षेत्र में 10 गुना से अधिक बढ़ा सकते हैं, जबकि ताजे पानी के उपयोग में 85% की कमी कर सकते हैं।

विस्तृत जानकारी के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ:

www.mlkwastemanagement.com

भविष्य की संभावनाएं:

इन मितव्ययी नवाचारों के साथ, यह हमारा उद्देश्य है कि जरूरतमंद और आम जनता तक उनकी पहुँच को अधिक से अधिक ऐसे प्रयोगों, प्रणालीयों या उत्पादों को पहुंचाया जा सके। सभी को 'जल साक्षर' होना चाहिए जैसा कि पुराने समय में हुआ करता था। हमारे गाँव में सभी जानते थे कि कुओं में पानी प्रदूषित नहीं होना चाहिए और यह सबसे कीमती संसाधन है। हमें अपनी बुनियादी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए जल जागरूकता लाने की जरूरत है और बच्चों को पानी की पर्याप्तता के लिए उपर्युक्त बुनियादी एवं तकनीकी जानकारी से परिचित कराना और स्वयं उस पर कार्य करें, अनुभव करें और जल संरक्षण, प्रबंधन और संवर्धन के गुर सिखें। □□

भारतीय संस्कृति और संरक्षण

❑ वैभव चतुर्वेदी

बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान में भगवान विष्णु शेष नाग के नीचे लेटी हुयी विशाल मूर्ती शेशशैय्या के नाम से लोकिप्रय है। रामायण के अनुसार, बांधवगढ़ को भगवान राम ने अपने भाई लक्ष्मण को लंका युद्ध के लिए उपहार में दिया था। बांधवगढ़, बांधव- भाई और गढ़ किले के शब्दों का मेल है।

भारत विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा देश है जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है। विश्व के कुल क्षेत्रफल का मात्र 2.4 प्रतिशत हिस्सा होते हुए भी भारत में दुनिया की कुल जैव विविधता का 8 प्रतिशत से अधिक हिस्सा है। अपने चार वैश्विक जैव विविधता हॉट स्पॉट के साथ, भारत विश्व के सौ अति-जैवविविध देशों में से एक है। देश में भूगर्भीय और जलवायु परिस्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला है, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न वन, घास के मैदान, आर्द्रभूमि, रेगिस्तान, पर्वतीय और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के साथ दस जैव-भौगोलिक ज़ोन हैं। ये पारिस्थितिकी तंत्र 91,200 से अधिक प्राणी प्रजातियों और 45,500 पौधों की प्रजातियों का पोषण करते हैं जिसमे काफी एंडेमिक प्रजातियां भी शामिल है जो विश्व में केवल यहीं पायी जाती हैं।इसके अलावा, भारत कई करिश्माई और आकर्षक प्रजातियों का भी घर है जिस में दुनिया के 70 प्रतिशत बाघों के साथ-साथ विश्व के अधिकांश एशियाई हाथी और एक सींग वाले गैंडे भी शामिल हैं। आज, देश की अधिकांश जैव विविधता 769 संरक्षित क्षेत्रों के नेटवर्क में संरक्षित है जो लगभग 162072 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला है जो भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र के 5 प्रतिशत से कम है। भारत की लगभग 70 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है और उनमें से अधिकांश जैव विविधता पर निर्भर आजीविका द्वारा समर्थित हैं। लगभग 40 करोड़ की भारी आबादी वाले लगभग 173,000 गाँव भारत के वनों के आसपास स्थित हैं। व्यापक गरीबी और अन्य आय के स्रोतों की कमी के कारण, इन लोगों की वन संसाधनों पर निर्भरता अत्यधिक है। प्राकृतिक संसाधनों पर इस व्यापक निर्भरता, बढ़ती जनसंख्या और आर्थिक विकास के दबाव के बावजूद यदि भारत की जैव विविधता आज संरक्षित है, तो इसका कारण भारत की प्राचीन संस्कृति और मान्यताएं ही हैं जिसमे प्रकृति और वन्यजीवों की सुरक्षा तथा सह-अस्तित्व का उच्च स्थान हैं।

प्रकृति के साथ सद्भाव में रहना भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। हमारे देश की पारंपरिक प्रथाओं, धार्मिक विश्वासों, अनुष्ठानों, लोककथाओं, कलाओं और शिल्पों और भारतीय लोगों के दैनिक जीवन में यह बहुतायत से परिलक्षित होता है। जबकि आधुनिक विश्व और पश्चिमी दुनिया में संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों का संधारणीय उपयोग अपेक्षाकृत एक नयी संकल्पना है, भारत में प्रकृति संरक्षण की लंबी परंपरा और सांस्कृतिक लोकाचार बहुत प्राचीन है। प्रकृति के संरक्षण की संस्कृति प्राचीन वैदिक काल की है। चारों वेद - ऋग्वेद, सामवेद, यजुरवेद और अथर्ववेद - ऐसे श्लोकों से भरे हुए हैं जो प्रकृति की सर्वोच्चता को दर्शाते हैं। ऋग्वेद में सूर्य, चन्द्रमा, वायु, बारिश, नदियों, पेड़ों, पहाड़ों का देवताओं के रूप में उल्लेख है जो स्वास्थ, धन और समृद्धि के दायक हैं। इसी प्रकार, अथर्ववेद प्रकृति के महत्व पर प्रकाश डालता है और इसमें पृथ्वी की प्रशंसा में कई श्लोक हैं। उल्लेखनीय दूरदर्शिता के साथ, तिरुक्कुरल, जो की तमिल भाषा में लिखित एक प्राचीन मुक्तक काव्य रचना है, प्रकृति के संरक्षण में रहने की आवश्यकता पर जोर देते हुए वर्णन करता है की किस तरह जगमगाता हुआ पानी, खुली जगह, पहाड़ियां और जंगल मानव संरक्षण के लिए एक किले का निर्माण करते हैं। इसी प्रकार सिख समुदाय के प्रमुख धर्मग्रन्थ में वर्णन है, वायु ही गुरु है। जल पिता है, और पृथ्वी सभी की महान माता है। जैन और बौद्ध धर्म, जो भारत के प्राचीन संप्रदाय हैं, प्रकृति के संरक्षण की बात करते हैं । बौद्ध धर्म सभी के प्रति सहिष्णुता, प्रेम, करुणा, क्षमा और अहिंसा में विश्वास करता है। जैन धर्म पूर्ण अहिंसा का मार्ग चुनते हुए पृथ्वी पर किसी भी प्राणी की हत्या को वर्जित मानता है।

वृक्षों को भारतीय संस्कृति में श्रद्धेय माना गया है क्यूंकि वे हमारे ही नहीं बल्कि पशु, पक्षी, कीट और सूक्ष्मजीव के अस्तित्व के लिए भी आवश्यक हैं। चारों वेदों में विभिन्न वृक्षों, जड़ी-बूटियों, फल-फूलों और उनके महत्व है वस्तृत वर्णन है। पेड़ और पौधों को चेतन प्राणी मान कर उन्हें नुकसान पहुंचाना वर्जित किया गया है। वृक्षों की ऐसी कई प्रजातियां हैं जैसे, पीपल, गूलर, नीम, बेल, बरगद, अशोक, आंवला आदि, जो हमारी संस्कृति, परंपरा और पौराणिक कथाओं में एक विशेष स्थान रखतीं हैं। इसके अलावा ऐसी कई प्रजातियां और भी हैं जिन्होंने समय के साथ सामाजिक और धार्मिक पवित्रता हासिल कर ली है। बेल, रुद्राक्ष, बेर, साल, कदंब, आम, नारियल आदि को देवी-देवताओं का प्रिय माना जाता है जिससे इनका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों में होने के साथ साथ इनका संरक्षण भी होता है। बौद्ध धर्म में साल और पीपल के वृक्षों का एक अहम् स्थान है क्योंकि मान्यता के अनुसार भगवान बुद्ध ने साल के वृक्षों के नीचे ही जन्म लिया और परिनिर्वाण प्राप्त किया, तथा बोधगया में पीपल के वृक्ष के नीचे बोध की प्राप्ति की।

जैन परंपरा में पवित्र माने जाने वाले वृक्ष तीर्थंकरों के साथ किसी न किसी रूप में जुड़े हुए थे- ऋषभदेव के साथ बर्गद, सांभवन नाथ और महावीर के साथ साल, शीतलनाथ के साथ बेल, वसुपूज्य के साथ कदंब, अनंत के साथ पीपल, मल्लिनाथ के साथ अशोक, और नेमिनाथ के साथ बकुला। बेर को सिखों द्वारा श्रद्धा के साथ देखा जाता है क्योंकि गुरु नानक देव जी ने सुल्तानपुर लोधी में बेइन नदी के तट पर इसका एक पौधा लगाया था और गुरु गोबिंद सिंह लुधियाना जिले के सीलोना के एक गांव में एक बेर के पेड़ के नीचे रुके थे। दोनों स्थलों को अब धर्मस्थलों में बदल दिया गया है। हमारे देश में जिस तरह वनस्पतियां प्राचीन मान्यताओं और परम्पराओं से जुडी हुई हैं, उसी प्रकार विभिन्न प्रकार के पशु और वन्यजीव तथा उनका संरक्षण प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता का हिस्सा रहे है। हमारी प्राचीन परम्पराओं में वन्य और पालतू पशुओं को स्थान और सम्मान दिया गया है। कई पशुओं को कई हिंदू और अन्य समुदायों द्वारा पवित्र और पूज्य माना जाता है। हिंदू सभी जीवित प्राणियों में देवत्व देखते हैं जिसके कारण, पशु देवता हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इसके अलावा हिन्दू धर्म में पशुओं को कई देवी देवताओं के वाहन के रूप में भी दर्शाया गया है। इनमें बाघ, हाथी, बैल, घोड़ा, मोर, हंस, उल्लू, गिद्ध, बैल, चूहे आदि शामिल हैं। इस प्रकार धर्म से जुड़े होने के कारण इन जीवों को सदियों से संरक्षण प्राप्त है। उदाहरण के लिए, भगवान कार्तिकेय के लिए पवित्र मोर का शिकार कभी नहीं किया जाता है। गज के सर के साथ भगवान् गणेश की मान्यता के कारण हाथियों का और उनके वाहन के रूप में मूषक का भी संरक्षण होता है। भगवान शिव और नाग की पूजा के साथ सांप का संबंध, और बाघ के देवी के वाहन के रूप में होने से भारत में विषैले सर्पों तथा बड़े परभक्षी पशुओं के प्रति भी ऐसी सहनशीलता है जो इन प्रजातियों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वैदिक भारत के ऋषि मुनि वन्य जीवों के साथ सुदूर जंगलों में रहते थे। प्राचीन दुनिया के किसी अन्य हिस्से में जंगली जानवरों के प्रति अहिंसा और करुणा को इतना जोर नहीं मिला जितना भारत में। वन्यजीवों से जुड़ी पवित्रता की भावना ने इन्हे संरक्षित किया और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में योगदान दिया।

धार्मिक वाटिकाएँ या पवित्र उपवन प्रकृति संरक्षण में भारतीय परंपरा के योगदान का एक और उद्धरण है। देश के कई हिस्सों में जंगलों के घटने के बावजूद, कई पवित्र उपवन अभी भी रेगिस्तान में शाद्वल के रूप में बरकरार हैं और समृद्ध जैविक विविधता का संरक्षण करते हैं। ये वह भूमि या जंगलों के हिस्से हैं जिन्हे किसी देवता या गाँव के लिए समर्पित, संरक्षित, और पूजा जाता है। पवित्र उपवन पूरे भारत में पाए जाते हैं, और पश्चिमी घाटों, पश्चिमी तट, और केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र के कई हिस्सों में इनकी संख्या बहुतायत में है। केरल में सैकड़ों छोटे-छोटे पवित्र उपवन हैं। जिन्हें सर्प कावू कहा जाता है, जो सर्पों के लिए समर्पित हैं। इसके अलावा भारत के कई हिस्सों में मंदिरों से जुड़े पवित्र तालाबों के उदाहरण भी हैं जिनसे कई लुप्तप्राय प्रजातियों जैसे कछुए, मगरमच्छ आदि के संरक्षण में योगदान मिलता है।

वर्तमान में आर्थिक विकास और प्रगति के साथ पर्यावरण काफी हद तक प्रभावित हुआ है। जहां एक ओर आर्थिक विकास ने उपभोक्तावाद को बढ़ावा दिया है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर काफी दबाव पड़ रहा है। दूसरी ओर पर्यावरण के असंतुलन से हमारे समाज का एक बड़ा वर्ग, जो काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है, हाशिए पर जाता जा रहा है। इससे उनके जीवन और आजीविका को आज एक गंभीर खतरे का सामना करना पड़ रहा है। इस परिस्तिथि में आज आवश्यक है की मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे भोजन, पानी, हवा और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के अधिकार को सुरक्षित किया जाए। आज जब आधुनिक समाजों में उभरती पर्यावरणीय और पारिस्थितिक समस्याओं को हल करने की चेतना बढ़ रही है, विश्व के कई देश पर्यावरण संरक्षण के लिए नीतियां बना रहे हैं।

जबकि एक तरफ ये नीतियां आधुनिक विज्ञान का सहारा लेती हैं, वे सभी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्राचीन युग में विकसित पारंपरिक ज्ञान पर निर्भर हैं जो हमें एक साधारण जीवन के मूल्य की अवधारणा सिखाती हैं। वर्तमान में हमें आवश्यकता है की हम अपने पूर्वजों की सरल नीतियों का अनुसरण करें, जिन्हें शायद हमारे मुकाबले पर्यावरण की बेहतर समझ थी। भारतीय परंपराएँ, रीति-रिवाज और धार्मिक मान्यताएँ हमें वनस्पतियों और जीवों के संरक्षण के बारे में बताती हैं। वे हमें पारिस्थितिकी का वह मौलिक सिद्धांत समझाती हैं जिसके अनुसार जीवमंडल के प्रत्येक जीवित इकाई की ऊर्जा और पोषक तत्वों के चक्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है जो दुनिया में जीवन चक्र सतत चलता है।

आज पर्यावरणविदों ने संरक्षण के लिए एक ताकत के रूप में संस्कृति के महत्व को महसूस करना शुरू कर दिया है और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित किया है। पर्यावरण और पारिस्थितिकी के संरक्षण के लिए धार्मिक शिक्षाओं और सांस्कृतिक परंपराओं का सकारात्मक उपयोग किया जा सकता है ताकि निकट भविष्य में हम अधिक स्थिर, स्वच्छ, समृद्ध और स्वस्थ वातावरण प्राप्त कर सकें। □□

नदी चिकित्सा वाहन (रिवर एम्बुलेंस) एक अदभुत प्रकल्प

❑ राजमोहन

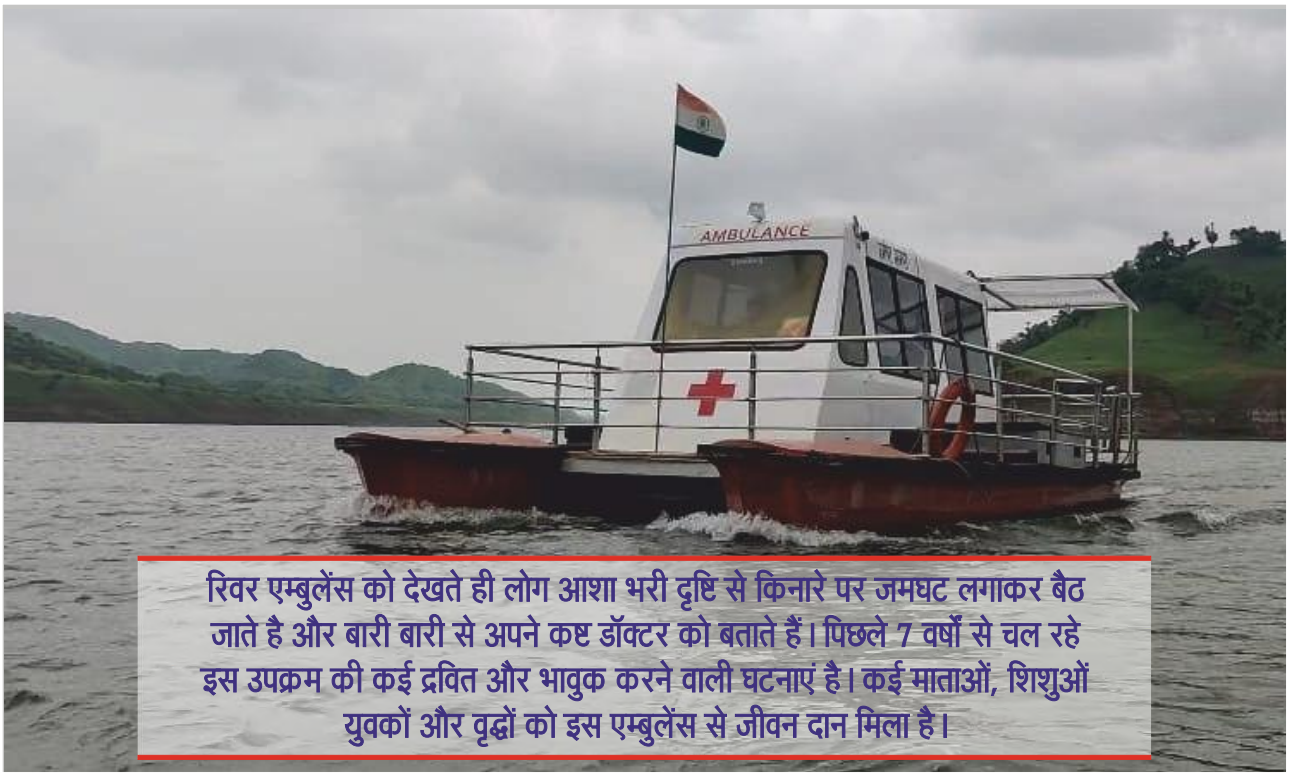

रिवर एम्बुलेंस को देखते ही लोग आशा भरी दृष्टि से किनारे पर जमघट लगाकर बैठ जाते है और बारी बारी से अपने कष्ट डॉक्टर को बताते हैं। पिछले 7 वर्षों से चल रहे इस उपक्रम की कई द्रवित और भावुक करने वाली घटनाएं है। कई माताओं, शिशुओं युवकों और वृद्धों को इस एम्बुलेंस से जीवन दान मिला है।

स्वर्गीय श्री अनिल जी दवे की संकल्पना नर्मदा समग्र का एक प्रकल्प रिवर एम्बुलेंस उनके संवेदनशील व्यक्तित्व की ऊंचाई का परिचय कराती है । सरदार सरोवर बांध का बैक वाटर 150 किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैला है इतने लंबे क्षेत्र में नर्मदा मैया के दोनों किनारे पर बसे जनजाति समाज के बंधु इस पहाड़ी इलाके में कई किलोमीटर केवल पगडण्डी के सहारे ही चलकर किसी दूसरे गांव पहुंच सकते है । इन सुदूर पहाड़ो में बसे एक घर की दूरी दूसरे घर से ऊंची नीची पहाड़ियों से होकर 1 से 2 किलोमीटर है । दूर दूर पहाड़ियों में बसे इन घरों तक सड़क, स्कूल, बिजली जैसी आधारभूत सुविधाएं पहुंचाना भी असंभव जैसा लगता है । पर कहा जाता है न ''जहां चाह है वहां राह है।'' यदि उनके घर तक सड़क नही पहुंच सकती तो नदी को ही मार्ग बनाकर उन तक पहुंचने का जतन किया नर्मदा समग्र ने।

2006-07 में स्व.श्री अनिल जी दवे जब राफ्ट से नर्मदा यात्रा कर रहे थे तब इसी मार्ग पर विश्राम करने कुछ समय के लिये रुके एक बच्चे की लगातार रोने की आवाज सुनने पर एक कार्यकर्ता को उन्होंने कारण जानने भेजा तब पता चला कि बच्चे के पैर में फोड़े की वजह से बिना सोये तीन दिन से रो रोकर उसका बुरा हाल है। अनिल जी ने तुरंत अपने साथ के डॉक्टर को भेजा डॉक्टर ने चीरा लगाकर उसका पस निकाला और कुछ दवा देते ही बच्चा गहरी निद्रा में सो गया। डॉक्टर के पूछने पर की आप बच्चे को डॉक्टर के पास लेकर क्यों नही गए तो जवाब मिला कि यहां से कम से कम 30-40 किलोमीटर की दूरी पर जाना पड़ता है। हमारे पास न कोई साधन है न पैसे । बस यहीं से अनिल जी के मन मे इस दुर्गम क्षेत्र में नदी के रास्ते समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचने के संकल्प ने जन्म लिया। मध्यप्रदेश के अलीराजपुर, बड़वानी, धार और महाराष्ट्र, गुजरात के लगभग 30 से अधिक नदी के दोनों ओर बसे इन ग्रामो में 2014 से रिवर एम्बुलेंस सतत सेवा दे रही है। एम्बुलेंस का बेसकेम्प ककराना जिला अलीराजपुर है। सभी ग्रामो में जाने का सप्ताह में चार दिन का क्रम बना हुआ है । रिवर एम्बुलेंस को देखते ही लोग आशा भरी दृष्टि से किनारे पर जमघट लगाकर बैठ जाते है और बारी बारी से अपने कष्ट डॉक्टर को बताते है । पिछले 7 वर्षों से चल रहे इस उपक्रम की कई द्रवित और भावुक करने वाली घटनाएं है। कई माताओं, शिशुओं युवकों और वृद्धों को इस एम्बुलेंस से जीवन दान मिला है। □□

Rethink of happiness

पश्चिमी सुख की कल्पना होटल,रिसोर्ट पर्यटन स्थल से बाहर निकलकर अवकाश के दिनों में वास्तव में वंचितों के लिये चलने वाले सेवा प्रकल्पों पर सपरिवार सेवा पर्यटन करने जाने की आवश्यकता है। जहां से प्रेरणा और संकल्प लेकर अंतिम पायदान पे खड़े व्यक्ति तक दया के भाव से नही अपितु नर सेवा नारायण सेवा का संकल्प समाज ले।

जल नायिका कोता बाई

श्रीमती कोता बाई भील बारां जिले के शाहबाद ब्लॉक की ग्राम पंचायत कस्बानौनेरा जो की शाहबाद से 28 किमी. दूरी पर हैं ग्राम कस्बा नैनेरा में भील समुदाय के 140 परिवार निवास करते हैं उनमें से कोता बाई भील साधारण भील परिवार की गृहिणी हैं इनके परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर हैं, लेकिन यह स्वभाव से तेज बोलने वाली निडर महिला हैं कोता बाई सिकोईडिकोन संस्था से 2001 में जुडी और सर्वप्रथम ग्राम पुरमपुर में VDC सदस्य के रूप में जुड़ी और महिलाओ का संगठन बना कर महिलाओ के लिये कार्य करने लगी। इस तरह समाज सेवा के कार्य करते हुऐ वर्तमान में VDC अध्यक्ष के रूप में चुनी गई। जिससे गांव में अच्छी पहचान बनी और VDC आम सभा मिटिंग में अध्यक्ष बनने पर किसानो एंव ग्राम विकास हित मे कार्य करने लगी। श्रीमती कोता बाई संस्था से जुडने के बाद संस्था के माध्यम से ग्राम विकास के लिए 2 एनिकट 2 तलाई मेडबन्दी का कार्य करवाया। जिससे सैंकड़ो बीघा जमीन सिंचित हो रही है।

तलाई ओर एनिकट से कोता बाई कि जमीन को पानी मिलने से कोता बाई उसके खेतो में अच्छी फसल होने लगी जिससे उसकी आर्थिक स्थिती में सुधार हुआ। कोता बाई रबी कि फसल में चना गेंहू सरसो एवं खरिफ कि फसल में मक्का, बाजरा, सोयाबीन की फसल करतें हैं पहले यहा कि जमीन में सिर्फ खरिफ की फसल ही की जाती थी, लेकिन एनिकट व तलाई बनने से रबी कि फसल भी करने लगे हैं। इसके कारण पुरमपुर के किसानो कि आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ हैं। किसान कल्ब के माध्यम से कृषी अधिकारियों से किसानो का संपर्क बढ़ा है एवं किसानों कि समस्याओं का समाधान करवाने में सहयोग किया ओर संस्था के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर किसान किचन गार्डन भी करने लगे है। पहले पुरमपुर का भील समुदाय कच्ची झोपड़ी बनाकर रहतें थे बच्चो कि शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं थे।

व्यक्तिगत जानकारी

1. नाम	:-	श्रीमती कोता बाई भील
2. पति का नाम	:-	हब सिंह भील
3. ग्राम	:-	पुरमपुर
4. ग्राम पंचायत	:-	कस्बानौनेरा
5. उम्र	:-	55 वर्ष
6. शिक्षा	:-	साक्षर
7. जाति	:-	भील
8. बच्चों की सं.	:-	3 (2 लड़का एवं 1 लड़की)
9. पूरा पता	:-	ग्राम, पुरमपुर पोस्ट- कस्बानौनेरा, तहसील शाहबाद, जिला बारां (राज.)

संस्था से जुड़ने के बाद कोता बाई के प्रयासो से भील समुदाय अपने बच्चो को स्कुल भेजने लगे हैं ओर अपने रहन-सहन में भी परिवर्तन किया हैं।

कोता बाई भील -आदिवासी महिला के संघर्ष की कहानी

भारत में राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र बारां जिले की शाहबाद तहसील की भील समुदाय की महिला कोताबाई का जीवन संघर्षपूर्ण रहा है मगर हार नहीं मानने की फितरत और समदुाय के लिए कुछ कर-गुजरने के इरादे के आगे निराशा और हताशा का कद छोटा पड़ गया। पति की मृत्यु के बाद दो बेटों व एक बेटी का पालन-पोषण करना, ऊपर से पुरूष प्रधान समाज की बेड़िया, ये सब बडी चुनौतीपूर्ण स्थितियां थी। मगर कोता बाई ने परिस्थितियों के आगे झुकने के बजाय लड़ने और जूझने का रास्ता चुना। पारिवारिक चुनौती के साथ-साथ कोताबाई ने पानी की कमी और खेती-किसानी और आजीविका से जूझ रहे समुदाय का संघर्ष भी देखा। कोता बाई जानती थी कि पानी की समस्या सामूहिक सहभागिता से ही सुलझाई जा सकती है। भूमि पानी के पारम्परिक ज्ञान का उपयोग करते हुए कोता बाई ने जल संरक्षण की दो योजनाओं पर स्थानीय संगठनों के समक्ष प्रस्ताव रखा और उन्हें वित्तीय व तकनीकी सहयोग के लिए प्रेरित किया। स्थानीय समुदाय के लोगों को भी कोता बाई ने इस परियोजना में 25 प्रतिशत वित्तीय सहयोग देने के लिए तैयार किया। कोता बाई कहती है ''हमारी जमीने बिना पानी के बेकार थी और हमें प्रतिवर्ष पलायन करना पड़ता था। मगर जन समुदाय व स्थानीय संगठनों के सहयोग से जल संरक्षण के लिए बने एनिकट से आज गांव में पलायन रूका है और कृषि उत्पादन बढ़ने से पशुपालन में बढ़ोत्तरी हुई, जिससे आय के स्रोत विकसित हुए है।'' कोता बाई के पास अब अपना पक्का घर है, गाय, बकरी, मुर्गीपालन उनको अतिरिक्त लाभ दे रहे है, साथ ही आटा पीसने की चक्की भी स्थापित की है। कोता बाई का मानना है कि कृषि प्रबंधन और पारम्परिक ज्ञान से ''जलवायु परिवर्तन से पड़ रहे खेती की चुनौतियों को कम किया जा सकता है।''उल्लेखनीय है कि सफलता की कहानी यूनाईटड नेशनस फ्रेमवर्क कन्वेंशन- 2018 (United Nations Framework Convention on Climate Change) की वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित की जा चुकी है।□□

(साभार - सिकोईडिकोन)

आँवली घाट (उत्तर तट) पर 21.02.2021 को नर्मदा समग्र के कार्यकर्ताओं द्वारा स्वच्छता अभियान चला कर लगभग 400 किलोग्राम कचरा एकत्रित कर उसे तट से दूर जाकर उचित स्थान पर उसका निस्तारण किया गया।

विगत दिनों नवीन जी से मुलाकात आंवली घाट पर हुई थी। उन्होंने ही नर्मदा समग्र के कार्यों और पर्यावरण के लिए जनजागरण की बाते बताई और आंवली घाट पर घाट सफाई के लिए बुलाया। जब घाट पर आकर देखा तो बहुत ही खुशी हुई कि शहर के लोग भी मां नर्मदा के प्रति जागरूक हैं और पर्यावरण के लिए काम करते है। भोपाल से आए सभी दोस्त बिना किसी शर्म के गंदे कपड़े, प्लास्टिक उठाकर घाट की सफाई कर रहे थे और बिना थके जब तक पूरा घाट साफ नहीं हुआ तब तक घाट की सफाई की और नदी से निकला कचरा भी सही स्थान पर डंप किया। मैं घाट पर बहुत बार आते रहता हूं और लोग भी घाट सफाई के नाम पर क्या करते है मैंने देखा है फोटो खींचना और निकल जाना लेकिन कभी पूरा घाट सफा होते आज तक नहीं देखा था । सभी के साथ मैं भी जुड़कर काम करने के लिए प्रेरित हुआ हूं आगे जो भी काम होगा में जरूर उसमे भाग लूंगा। नर्मदे हर ....

नाम - अतुल चौहान, निवासी - रेहटी, जिला सीहोर

राष्ट्रीय अतंरराष्ट्रीय स्तर पर नर्मदा समग्र की सहभागिता

विश्व जल दिवस 2021 के अवसर पर पर्यावरण संरक्षण गतिविधि द्वारा दिनांक 23 मार्च 2021 को आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार ''हर बूँद अनमोल'' में नर्मदा समग्र की सहभागिता रही। जिसमें संचालन नर्मदा समग्र के मुख्य कार्यकारी कार्तिक सप्रे जी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ....

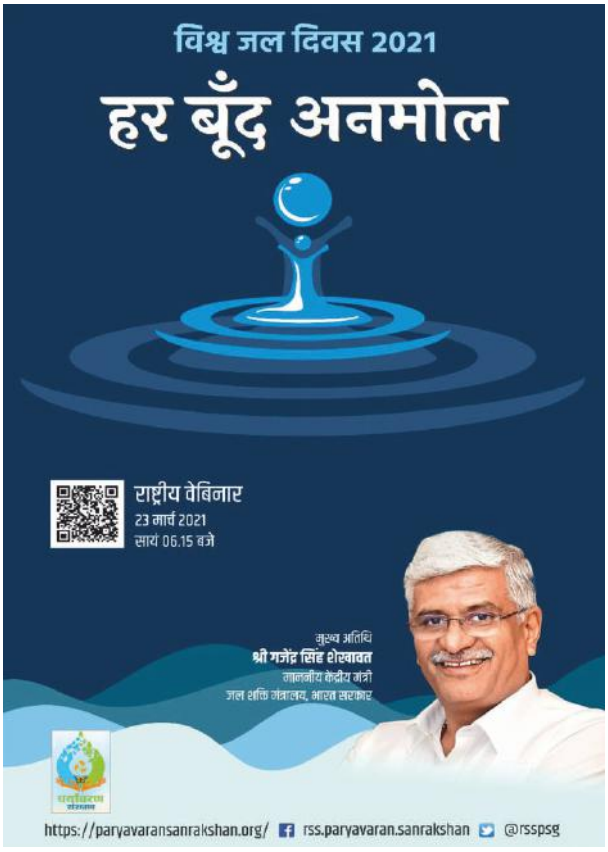

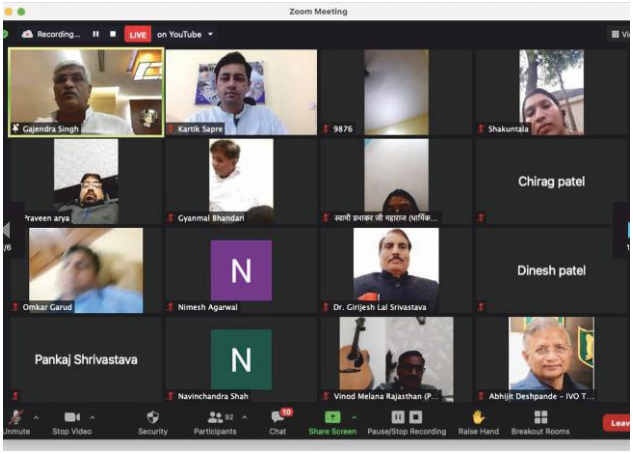

जबलपुर स्थित ग्वारीघाट पर 17 मार्च 2021 को नर्मदा समग्र की टोली द्वारा स्थानीय व्यापारियों के साथ घाट स्वच्छता को लेकर चौपाल की और साथ ही 50 छोटे-दुकानदारों को कूड़ेदान (सूखे कचरे के लिए) का वितरण किया गया। नर्मदा समग्र के कार्यकर्ताओं, नर्मदा अनुरागियों के साथ ही, जबलपुर नगर निगम, जन अभियान परिषद और अन्य स्थानीय संस्थाओं के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

रेवा पात्र का रख-रखाव

जब पानी साफ निकलना बंद हो जाए, उस समय सफाई करना आवश्यक हो जाता है।

1. ऊपरी सतह से 5 सेंटीमीटर रेत को हटाना चाहिए, हर 30 दिन बाद यह प्रक्रिया करनी चाहिए।
2. काई का रेत पर रहना जल को स्वच्छ करने में लाभदायक होता है, इसे तभी हटाये जब रेत को साफ करना हो, अथवा काई अधिक होने पर इसे महीने में एक बार साफ कर सकते हैं।
3. रेत व कोयला तभी बदलना चाहिए जब पानी का स्वाद बदला सा लगें या स्वच्छ पानी न आएँ।
4. रेवा पात्र की नियमित अंतराल (लगभग 3 माह) में पूरी सफाई करनी चाहिए।

अन्य उपयोग / कल्पनाएँ

भूजल रिचार्जिंग

दूषित जल का अन्य कार्यों में पुनः उपयोग

पोटैशियम परमैंगनेट, निस्संक्रामक (जैसे NaOCl) इत्यादि के प्रयोग से पानी को शुद्ध कर पीने व अन्य उपयोग में लिया जा सकता है।

ReWA

Apparatus for Rectification of Water

रेवा पात्र एक स्वच्छ जल माध्यम (स्वजलम) है। जिसे नर्मदा जी के किनारे बसे ग्रामों व विद्यालयों में प्रयोग में लाया जा सके इस उद्देश्य से बनाया गया है। नर्मदा समग्र के प्रणेता व संस्थापक स्व. अनिल माधव दवे जी की सदैव यह इच्छा रही है कि हर व्यक्ति को पीने व उपयोग में स्वच्छ जल मिले, वह प्रदूषित जल से होने वाली बीमारी से बचे और स्वस्थ रहे। उनका आग्रह था कि स्थायी समस्याओं का स्थायी निदान भी हो सकता है, जो आसान, न्यूनतम लागत का एवं वहीं उपलब्ध साधनों व सामग्रियों से भी किया जा सकता है। इस 'स्वजलम' में यह 'स्व' उस स्वयं, स्वावलंबन, और स्वच्छ को दर्शाता है और हमें प्रेरित करता है। विशेष कर रेवा पात्र को विद्यार्थी बनाएँ ऐसा प्रयास रहेगा जिससे उनमें सामान्य विज्ञान के प्रति रुचि जागे, विचार शक्ति बढ़े और वह इसका सार समझ सके कि हम अपने स्तर पर अपनी समस्याओं के सुचारू समाधान स्थायी वस्तुओं से भी कर सकते हैं जो शायद किसी अन्य समाधान से ज्यादा टिकाऊ, आसान व संतोषजनक हो सकता है। इसी विचार को आगे बढाते हुए नर्मदा समग्र के कार्यकर्ताओं द्वारा **ReWA** का निर्माण किया गया है। इसका शुभारंभ व प्रशिक्षण विशेष रूप से अनिल दवे जी की जयंती (विजयादशमी 2017) के अवसर पर किया गया। आइए हम सब मिलकर इस प्रयास, स्वच्छ जल माध्यम - **ReWA** का स्थापन कर उपयोग करें, इसमें और क्या सम्भावनाएँ हैं उसे खोजें व स्वस्थ रहें।

Narmada Samagra
narmadasamagra@gmail.com
+91 755 2460754
www.narmadasamagra.org

Knowledge Partner
MLK Waste Management
info@mlkwastemanagement.com
+91-99871 25243
www.mlkwastemanagement.com

रेवा स्वजलम

विशेषताएं

- हमारे आस-पास उपलब्ध वस्तुओं/सामग्री के उपयोग से न्यूनतम लागत में निर्माण
- सरल स्थापन विधि व सहज विस्थापन
- बिजली की आवश्यकता नहीं
- सरल रख-रखाव
- आपातकालीन स्थिति में उपयोगी
- प्राकृतिक जल छनन प्रक्रिया पर आधारित

सामग्री

टंकी / कंटेनर (पात्र) 100 लीटर	- 1 नग
नल (टोटी)	- 1 नग
रेत (बालू)	- 40 प्रतिशत
कोयला (चारकोल)	- 20 प्रतिशत
जीरा गिट्टी /कंकर (2-5 मी.मी.)	- 10 प्रतिशत

अन्य सामग्री जैसे 1/2 इंच का UPVC पाइप, 2 एल्बो, कपड़ा, छोटी प्लेट
(पात्र अनुसार प्रतिशत की मात्रा तय करें)

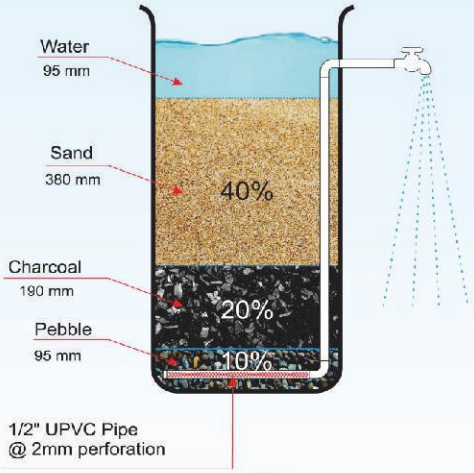

स्थापन प्रक्रिया

1. 100 लीटर पात्र ले;
2. UPVC (1/2") पाइप में थोडी दूरी पर छिद्र करें;
3. चित्र में दिखाए अनुसार रखें एवं पाईप, एल्बो व नल लगाये;
4. पात्र में सब से निचे जीरा गिट्टी डालें;
5. जीरा गिट्टी के ऊपर कोयला (वुड चारकोल/ एक्टीवेटेड चारकोल) डालें;
6. चारकोल के ऊपर रेत डालें;
7. रेत के ऊपरी सतह पर कपड़े से भी ढक सकते हैं, और/अन्यथा ऊपरी सतह पर जहाँ पानी गिरेगा, उस स्थान पर एक प्लेट रखें, जिससे पानी गिरने पर रेत की सतह ख़राब न हो
8. लगाया गया नल, रेत की सतह से 5-10 से.मी. ऊपर होना चाहिए व रेत हमेशा पानी में डूबी होनी चाहिए।

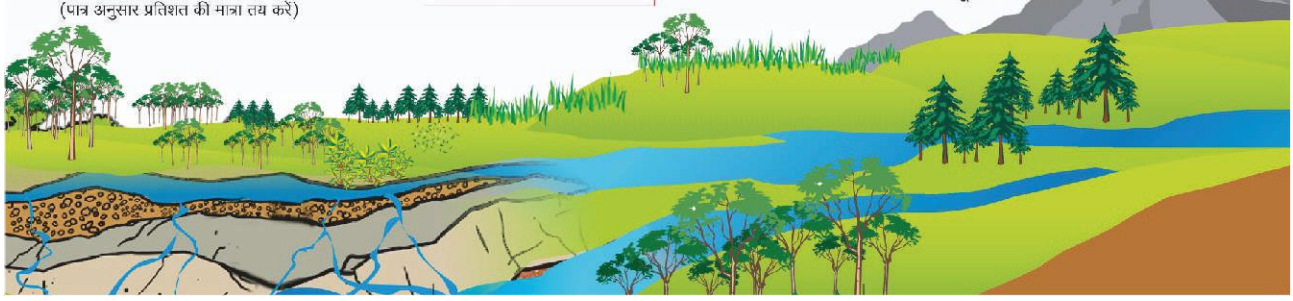

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2 अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित। संपादक कार्तिक सप्रे। फोन नं. : 0755-2460754